International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 95-98

समाज के नवनिर्माण में साहित्य की भूमिका

डॉ. निशा जैन*

सार

साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ–साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखंड की विसंगतियों विदूषताओं एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है, जिससे समाज में सुधार आता है और सामाजिक विकास को गति मिलती है यह निर्विवाद है कि साहित्य द्वारा समाज में परिवर्तन अवश्य लाया जा सकता है। विकृत साहित्य से समाज पतन की ओर तथा सद्साहित्य से उन्नति पर अग्रसर होता है। समाज और साहित्य में घनिष्ट संबंध है। साहित्य की पारदर्शिता समाज के नवनिर्माण में सहायक होती है। वर्तमान समय में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण साहित्य पर्याप्त समृद्व हो रहा है साहित्य की पृष्ठभूमि को देखते हुए आशा बंधती है कि वर्तमान समय में जब समाज दिशाहीन हो रहा है, नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है, जीवन की विसंगतियॉ साहित्यकार को विरुद्व लिखने के लिए बाध्य कर रही है। विचारणीय यह है कि वर्तमान में जो अच्छा लिखा जा रहा है, वह पढा नही जा रहा और जो पढा जा रहा है, वह निर्माण की भूमिका नही निभा रहा, आज साहित्य यथार्थ पर आधारित है, समाज निर्माण के लिए यर्थाथ के साथ सकारात्मक सोच और मानव मूल्यों की स्थापना आवश्यक है। समाज के यर्थाथवादी चित्रण, समाज सुधार का चित्रण और समाज के प्रसंगो की जीवंत अभिव्यक्ति साहित्य और समाज के नवनिर्माण का कार्य करती है इसी संदर्भ में अमीर खुसरो से लेकर तुलसी, कबीर, जायसी, रहीम, निराला, प्रेमचंद तक की श्रंखला के रचनाकारों ने समाज के नवनिर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया है। साहित्यकार समाज के प्रत्येक वर्ग के नजदीक होता है। आज आवश्यकता है कि सभी वर्ग यह समझे कि साहित्य समाज के मूल्यों का निर्धारक है और उसके मूल तत्वों को संरक्षित करना जरुरी है क्योंकि साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावों की सुंदर अभिव्यक्ति है। साहत्य प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता चला आ रहा है समय के साथ मानव में जो बोद्विक परिवर्तन आया वही परिवर्तन हमें साहित्य में तो मिलता है, लेकिन इतिहास में नहीं। समाज में जो परिवर्तन साहित्य कर सकता है वह और कोई नहीं कर सकता। साहित्य न केवल मानव में विवेक जाग्रत करता है अपितु राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शब्दकोशः *साहित्य समाज, पारदर्शिता, नवीन आविष्कार, भौतिक संसाधन।*

प्रस्तावना

मानव एक चिन्तनशील प्राणी है। वह समाज में जो देखता है, उस पर चिन्तन करता है, फिर उसे अपनी अभिव्यक्ति प्रदान करता है। वर्तमान समय में नित नवीन आविष्कारों एवं भौतिक संसाधनो की अभिवृद्वि के कारण जहॉ मानव रंगीन स्वपनों के संसार में खोया हुआ है, वही दूसरी ओर समस्त विश्व ऐसे वीभत्स भयावह, विनाशकारी आतंकवाद के शिकंजे में फॅस गया है जिसके कारण संपूर्ण मानवता भयाक्रान्त है। साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ–साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है। हितेन साहित्यम, साहित्य , साहित्यस्य

* सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महिला महाविद्यालय, रामबाग जयपुर, राजस्थान।

भावः साहित्यम् अर्थात जिसमे हित की भावना सन्निहित हो, उसे साहित्य कहते है। साहित्य जीवन की सच्ची अभिव्यक्ति है। साहित्य के अवलोकन से हमें समाज के आचार–विचार, उतार चढाव, सभ्यता–संस्कृति आदि का स्पष्ट परिचय प्राप्त होता है। साहित्य का दायरा असीमित है जिसके अर्न्तगत संस्कृति, समाज, विज्ञान, राजनीति, अर्थशास्त्र, पर्यावरण सभी आ जाते है। ऐसे में आज साहित्यकार का कर्तव्य पूर्व से अधिक बढ गया है क्योंकि अब ज्ञान एवं जीवन के जटिल व्यापारों का अत्यधिक विस्तार हो रहा है। साहित्यकार अपने समय, स्थान, परम्पराओं एवं परिवेश से प्रभावित हुए बिना नही रह सकता।

विश्व साहित्य का अनुशीलन करने से प्रतीत होता है साहित्य दो तरह का होता है सार्वकालिक साहित्य और समकालीन साहित्य। सार्वकालिक रचना शाश्वत होती है, जिस पर भूत, भविष्य और वर्तमान का कोई प्रभाव नहीं होता किन्तु समकालीन समय में साहित्य को संघर्षों, उदेद्लनो, दस्तकों और आलोचनाओं को झेलना और विवशताओं से लडना होता है। मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत सशक्त रचना कालजयी होकर एक स्थान पर ठहर जाती हैं और पीढी दर पीढी जनता उसका आस्वादन कर संरक्षण पाते है। ऐसी ही महान् कृतियॉ एक बार जन्म लेने के पश्चात् अपने दायरे में सीमित नही रहती, वे समय और ऐतिहासिक, भौगोलिक सीमाओं को लांघकर संपूर्ण विश्व की शक्ति बन जाती है।

तुलसीदास हिन्दी साहित्य के जगमगाते नक्षत्र है, उन्होने अपने युग की वास्तविक परिस्थितियों का संपूर्णता से अध्ययन, मनन, और चिन्तन किया था। रामचरितमानस् के माध्यम से अनेक आदर्श प्रस्तुत किये है। तुलसी ने एक आदर्श समाज एवं आदर्श धर्म की प्रतिष्ठा की है पात्रों के आदर्श चित्रण द्वारा लोकहित एवं लोक मंगल की शिक्षा देते हुए सम्पूर्ण विश्व के मानवों के सम्मुख आदर्श जीवन की रुपरेखा प्रस्तुत की है। दुष्टों के दलन एवं भक्तों के उद्वार हेतु राम की अवतारणा की है। रामचरितमानस् में शाश्वत साहित्य के लिए अनिवार्य सभी गुण विद्यमान है। शासक के कर्तव्यों का विवेचन करते हुए भी उन्होने लोककल्याण की भावना को ही प्रधानता दी है

जासु राज्य प्रिय प्रजा दुखारी, सो कृप अवसि नरक अधिकारी।

इस प्रकार कवि ने एक ओर प्रजा को सचेत किया है तो दूसरी ओर प्रजा पर अत्याचार करने वाले शासक को भी सचेत किया है। तुलसी ने अपने समय की जनता के हद्य से हद्य मिलाकर उसके आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति की है।

कबीर का काव्य आज भी प्रासंगिक है। ये एक क्रांतिपुरुष है जिन्होने समाज के भीतरी और बाहरी दोनो पक्षों को आक्रमण का निशाना बनाया इन्होने देखा कि व्रत, रोजा और नमाज आदि बाहरी आडम्बरों के कारण हिन्दू और मुसलमसन आपस में लडते–झगडते रहते है।

पाहन पूजै हरि मिलैं, तो मै पूजूँ पहार, चाकी कोई न पूजई, पीस खाय संसार।

कबीर ने गूढ दार्शनिक विवेचना में फॅसने का यत्न नही किया उन्होने देखा कि मूलरुप मे सब धर्म मनुष्यता, दया, परोपकार, दानशीलता, ईश्वर भक्ति, मानवीय प्रेम एवं सहयोग, शांति में विश्वास करते है, लेकिन धर्म के ब्रहाचरण एवं पूजा–आराधना के प्रकारों को लेकर ही सारा विवाद एवं वैमनस्य है, अतः उन्होने हिन्दुओं एवं मुसलमानों के उन सभी बाहरी दिखावे की निन्दा की जो मनुष्यता के विरुद्व जान पडते है।

कांकरि पाथरिं जोरि के, मस्जिद लई चुनाय,
ता चढि मुल्ला बांगदे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।

जयशंकर प्रसाद की कामायनी एक ऐसा महाकाव्य है जो जीवन जीने की कला सिखाती है। कामायनी का प्रेरक तत्व जीवन के अर्थ की खोज है जो इस महाकाव्य का प्रतिपाध विषय है शाश्वत सत्य, सत्–असत् वस्तुओं के संघर्ष में सौन्दर्य की झलक, लोकहित और लोकानुरंजन के समन्वित रुप की प्रस्तुति और सौन्दर्योन्मुखी वृति। सम्पूर्ण विश्व के लिए यह आज भी प्रासंगिक और उपादेय है। श्रद्वा सर्ग की पंक्तियॉ आज भी सम्पूर्ण वियव को मानवता के सूत्र में पिरोकर शांति का पाठ पढाना चाहती है।

शक्ति के विद्युत कण जो व्यस्त विकल बिखरे है,

हो निरुपाय समन्वय उसका करें व्यस्त विजायनी मानवता हो जाय।

इस महाकाव्य में इडा बुद्विवादी संस्कृति की प्रतीक है और श्रद्वा हद्यवादी की। श्रद्वा के उदार, पवित्र चरित्र ये प्रभावित होकर नायक मनु के समक्ष परम सत्य का मार्ग प्रशस्त होता है। कामायनी का सत्य मानव मूल्यों पर आधारित है, जिन्हे अपनाकर मानव जीवन पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ सकता है।

कामायनी का नायक मनु स्वार्थ, संकीर्णता, भय और अशांति की स्थिति में श्रद्वा के सहारे ही सेवा, संयम दान धर्म और त्याग की ओर अग्रसर होता है। महाकाव्य मार्ग पर निरंतर चलते हुए वह शिव में परिणत हो जाता है, यही शिव अथवा शिवत्म जीवन है।

कामायनी में शाश्वत सत्यों का भरपूर उदद1ारण है। श्रद्वा उनके सम्मुखदया को जीवन का केन्द्र बनाने पर बल देती है। उसका मानना है कि प्रकृति देती है,इसलिये सदा सम्पन्न रहती है, आकाश के उर्जा प्रदान करने सके हम सचेतन बने है। प्रकृति के इस उदारवादी दृष्टिकोण के परिणामस्वरुप ही हमारा अस्तित्व है।

औरों को हंसते देखो मनु हंसो और सुख पाओ,

अपने सुख को विस्तृत कर लो सबको सुखी बनाओं।

साहित्य द्वारा समय में परिवर्तन–समाज निर्माण की प्रवृति लगभग 500 वर्ष पूर्व तुलसीदास कृत रामचरितमानस् में दिखाई देती है उस स्तर का क्रातिकारी महाकाव्य आज तक हमारे सामने उभर कर नही आया है। कबीर, रहीम का समाज में व्याप्त अंधविश्वास और सडी–गली मान्यताओं, रुचियों आदि को दूर करने में पर्याप्त योगदान रहा है। साहित्य अतीत से प्रेरणा लेता है, वर्तमान को चित्रित करता है और भविष्य का मार्गदर्शन करता है। प्रेमचन्द का किसान, श्रमिक चित्रण उस पीडा व संवेदना का प्रतिनिधित्व करता है जिनसे होकर आज भी शोषित वर्ग त्रस्त है। साहित्य की सार्थकता इसी में है कि वह किसी सूक्ष्मता और मानवीय संवेदना के साथ सामाजिक अवयवों को उद्घाटित करता है। साहित्य संस्कृति का संरक्षक और भविष्य का पथ–प्रदर्शक है। संस्कृति द्वारा संकलित होकर ही साकहत्य लोकमंगल की भावना से समन्वित होता है। पंत की पंक्तियां इस संदर्भ में कहती हैः–

वही प्रज्ञा का सत्य स्वरुप हद्य में प्रणय अपार,

लोचनों में लावण्य अनूप लोक सेवा में शिव अधिकार।

वर्तमान समय में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण अनेक व्यक्ति साहित्य का सृजन कर रहे है। आज का साहित्य कार व्यावसायिक हो रहा है उसे समाज और देश से अधिक चिन्ता अर्थ की है। अर्थ और राजनीति ने अपने साथ काम को भी लपेट लिया है विलासिता युक्त जीवन जीने की चाह ने मनुष्य को स्वयं के दायरे में समेटते हुए मान–मर्यादाओं एवं कर्तव्यों से विमुख कर स्वार्थी बना दिया है।स्वार्थ से प्रेरित और स्वभाव से विवश चरित्र और संस्कार के अभाव से अवश आपाधापी के संकीर्ण रास्तों में खोये हुए हम भूल जाते है अपने देश समाज और परिवार को ।

आज की उपभोक्तावादी मनोवृति ने व्यक्ति को आत्मकेन्द्रीत बना दिया है परिणामस्वरुप उसकी सोच संकीर्ण हो गई है। नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है साथ ही मानवीय संवेदनाएं लुप्त हो रही है। दिन दहाडे होने वाले अमानुषिक कृत्य हिंसा, अशोभनीय घटनाऐं शायद अब मानवमन को विचलित नही करती। मूल्यहीनता के इस वातावरण में मानव में सहयोग, सद्भाव, संवेदना और भाईचारे के स्थान पर असहयोग, अलगाव, असंवेदना तथा पारस्परिक विद्वेष पनपता जा रहा है व्यावसायिक पत्रिकाओं ने स्तरहीन समाचार पत्रों ने हमारी भाषा को रुग्ण बना दिया है और परिवेश में हाशिए पर पटक दिया है। आधुनिक परिवेश में साहित्यकार के समक्ष अपेक चुनौतियां है अपेक समस्याऐं है जिनका सामना साहित्यकार कर रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश नित नवीन समस्याओं से घिरने लगा है तब साहित्यकारों ने उन समस्याओं को लेकर अपनी लेखनी चलाई, विभाजन समस्या, धर्म के नाम पर खुन–खराबा, स्त्री–पुरुष संबंध,

सयुंक्त परिवार का विघटन, नारी मुक्ति, नारी शोषण, तलाक से त्रस्त बच्चे आदि विषयों पर विचार विमर्श हुआ। लेखक सदैव देश और समाज की स्थितियों से प्रभावित होकर ही लिखताहै। आवश्यकता है नैतिक मूल्यों को समाहित किये एक वीर राष्ट्र क्षरा कर्मठ और ईमानदार राष्ट्र की छवि प्रस्तुत करने वाले साहित्य की, जिसे पाकर पाठक सादा जीवन उच्च विचार अपनाते हुए सत्य पर चलने वाले नागरिक बन पायें

यदि हमारा साहित्य उन्नत है, समृद्विशील है तो हमारा राष्ट्र भी विकसित होगा राष्ट्र के जीवित रहने में साहित्य की अहम भूमिका है। मुर्दा है वह देश जहॉ साहित्य नही है। राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की भी अहम भूमिका रही है। आजादी के समय से लेकर आज तक समाज व राष्ट्र के नव निर्माण में नारी ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सक्रिय योगदान दिया है, महिलाओं की शक्ति को कभी कम नही गिना जा सकता। एवरेस्ट चढने से लेकर अंतरिक्ष में उडान भरने वाली व देश की एकता में भागीदारी कर महिलाओं ने नारी शक्ति का गौरव बढाता है।

महिला की क्षमता को अनदेखा करके समाज की कल्पना करना बेमानी होगा। शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के बिना परिवार समाज और देश का विकास संभव नही है। सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, सरोजनी नायउफ, उषा देवी मित्रा आदि कई लेखिकाओं ने अपने समय को अभिव्यक्ति दी है, स्वतंत्रताके बाद नारी लेखन मे मुक्ति के स्तर उभरे है, वह नारी जिसे पुरुषों ने या तो सती सावित्री का रुप दे रखा था या उसके स्वप्नलोक में स्त्री बस एक खुशबुदार देह थी, जिसके अंदर भावना नही थी, उस नारी ने अपनी पारंपरिक छवि को तोडा, नारी ने ही नारी की पीडा को शब्द दिये, उसके जीवन को व्यथा कथा को समझा और शब्दों में अभिव्यक्त किया। दाम्पत्य जीवन के बदलते संबध, पारिवारिक मूल्यों व मान्यताओं में बदलाव, परिवेश के प्रति सजगता, अन्याय का प्रतिरोध नीति–अनिति, घर और बाहर के दोहरे बोझ से संघर्ष इन सब तत्वों ने साहित्य के नये यथार्थ को देखा।

आज उपर्युक्त स्थितयों में भी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के पारंपरिक मूल्यों के साथ साहित्य में भारतीय संस्कृति नैतिकता, ईमानदारी, सत्य, अहिंसा के साथ ईश्वर के अस्तित्व को भी पूर्ण रुप से देखा जा सकता है यही वर्तमान साहित्य में नव निर्माण की भूमिका है।

❖◆❖